प्रश्नः

''यदि एक कलीसिया दूसरी की तरह अच्छी है, तो फिर असाज़्प्रदायिक होने की ज़्या आवश्यकता है?''

उज़रः

हमारा लक्ष्य असाज़्प्रदायिक होना है। लेकिन आप परेशान ज़्यों हैं? यदि एक कलीसिया दूसरी की तरह ही अच्छी है, तो फिर असाज़्प्रदायिक होने पर चिंता ज़्यों है?

हम इसी प्रश्न का उज़र देना चाहते हैं, लेकिन आरज़्भ हमें अपने लक्ष्य को समझाकर और उसका पक्ष बताकर ही करना होगा।

असाज़्प्रदायिक मसीहियत ज़्या है

पहले तो, असाज़्प्रदायिक मसीहियत की व्याज़्या पर ध्यान दें। आइए इन शज़्दों की परिभाषा से आरज़्ज़ करते हैं।

''साज़्प्रदायिक कलीसिया'' (डिनोमिनेशन) शज़्द का ज़्या अर्थ है? इस शज़्द से हमारा अभिप्राय बिल्कुल वही है जो बहुत से लोग धार्मिक संदर्भ में इस शज़्द के इस्तेमाल के समय करते हैं। इस शज़्द के कुछ अर्थ जो मुझे मिले हैं वे इस प्रकार हैं: ''कोई धार्मिक समूह या गुट''[1]; ''अलग नाम वाली कलीसिया या गुट''[2]; ''सज़्प्रदाय' शज़्द किसी अलग धार्मिक संगठन के लिए लागू होता है''[3]; ''किसी विशेष नाम के अधीन विशेष प्रकार की

शिक्षा को मानने वाले किसी धार्मिक गुट के लिए लागू होता है।''[4]

इस प्रकार सज़्प्रदाय किसी धार्मिक *गुट* को कहा जाता है। यह *विशेष नाम और शिक्षाओं वाला मत होता* है। हर सज़्प्रदाय की अपनी रीतियां, शिक्षाएं और उपासना की पद्धति होती है। बहुत से सज़्प्रदायों का केन्द्रीय संगठन होता है जो उस सज़्प्रदाय का प्रतिनिधित्व और नियन्त्रण करता है।

यह विशेष शिक्षाओं वाला *पूरे संगठन का एक भाग होता है।* साज़्प्रदायिक कलीसियाओं के लेखकों का मानना है कि प्रत्येक सज़्प्रदाय सज़्पूर्ण मसीहियत का एक भाग है, और अलग-अलग साज़्प्रदायिक कलीसियाएं मिलकर मसीह की एक बड़ी देह बन जाती हैं।

''असाज़्प्रदायिक'' शज़्द से हमारा ज़्या भाव है? हमारा लक्ष्य इतिहास के उस समय में जब साज़्प्रदायिक कलीसिया नहीं थी पीछे जाकर वहां पाई जाने वाली कलीसिया को फिर से बहाल करना है। आप हमारे लक्ष्य को *पूर्व* - साज़्प्रदायिक कह सकते हैं।

ज़्या इतिहास में कभी ऐसा समय भी था? हां! नये नियम के समय केवल एक ही देह थी (इफिसियों 4:4); और वह देह कलीसिया थी (इफिसियों 1:22, 23; तु. मज़ी 16:18; 1 कुरिन्थियों 12:20)। इस तरह किसी प्रकार की कोई साज़्प्रदायिक कलीसिया नहीं थी और केवल एक ही कलीसिया थी जिसे मसीह की देह कहा जाता था। पूरी मसीहियत मिलकर वह एक कलीसिया बनती थी।

साज़्प्रदायिक कलीसिया के होने की सबसे अधिक सज़्भावना हमें कुरिन्थुस की स्थिति में मिलती है:

> ज़्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुज़्हारे विषय में बताया है, कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आप को पौलुस का, कोई अपुल्लोस का, कोई कैफा का, कोई मसीह का कहता है। ज़्या मसीह बंट गया? ज़्या पौलुस तुज़्हारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुज़्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला? (1 कुरिन्थियों 1:11-13)।

यहां ऐसी कोई साज़्प्रदायिक कलीसिया नहीं थी जैसी आज देखने को मिलती है; ज़्योंकि वहां साज़्प्रदायिकवाद के केवल बीज ही थे और उन बीजों को भी दबा दिया गया था! (तु. गलातियों 5:19-21)। नये नियम के समय में केवल एक ही कलीसिया थी और उस कलीसिया को तोड़ने या गुटों में बांटने वाली किसी भी लहर की निन्दा होती थी।

इस प्रकार नये नियम की कलीसिया असाज़्प्रदायिक थी। हमारा उद्देश्य वैसी ही कलीसिया बनना है! वह कलीसिया बनने के लिए हमें साज़्प्रदायिक कलीसिया से अलग होना आवश्यक है। नये नियम की कलीसिया असाज़्प्रदायिक थी, इसलिए जब हम साज़्प्रदायिक कलीसियाओं की बात करते हैं, तो हम उस परिस्थिति की बात कर रहे होते हैं जो प्रेरितों के बाद उत्पन्न हुई और पहली सदी के बाद नई-नई कलीसियाएं बन गईं।

असाज़्प्रदायिक मसीहियत का पक्ष

दूसरा, असाज़्प्रदायिक मसीहियत के पक्ष पर विचार करें। हमें असाज़्प्रदायिक कलीसिया का पक्ष ज़्यों लेना चाहिए?

पहली बात, कुछ लोग आपज़ि करते हैं कि नये नियम की कलीसिया की तरह असाज़्प्रदायिक होना *असज़्भव* है ज़्योंकि परमेश्वर ने साज़्प्रदायिकवाद से कलीसिया को फिर से बहाल करने के लिए कोई नमूना नहीं दिया है।

कुछ लोग कहते हैं कि इसका कोई नमूना या समय नहीं है। वे यह नहीं मानते कि परमेश्वर चाहता है कि हम बाइबल को धर्म में अपने न बदलने वाले अगुवे के रूप में इस्तेमाल करें या यह कि आज की कलीसिया के लिए नये नियम की कलीसिया ही एक नमूना है।

ज़्या वे लोग सही हैं? प्रेरितों को यह बताने के बाद कि वे दूसरों को वही बातें सिखाएं जो उन्हें सिखाई गई थीं, यीशु ने कहा, ''मैं जगत के अन्त तक सदैव तुज़्हारे संग हूं'' (मज़ी 28:20)। ज़्या इससे यह लगता है कि यीशु ने चेलों से प्रेरितों को दिए गए उस नमूने को बदलने की उज़्मीद की होगी? यहूदा 3 में हम ''उस विश्वास'' के विषय में पढ़ते हैं ''जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।'' ज़्या इससे यह लगता है कि नये नियम का वह नमूना केवल पहली सदी में रहने वालों के लिए ही दिया गया था? पौलुस ने कहा कि यदि वह या कोई भी स्वर्गदूत किसी दूसरे सुसमाचार का प्रचार करे जिसका प्रचार उसने किया था, तो वह स्वर्गदूत श्रापित हो (गलतियों 1:8)। ज़्या उसकी शिक्षा में ऐसा नमूना था जो केवल अस्थाई ही था?

यदि नया नियम ''जगत के अन्त तक'' सब लोगों की अगुआई के लिए दिया गया था, तो हमारे लिए यह मानना आवश्यक है कि कलीसिया के लिए ''जगत के अन्त तक'' नया नियम एक नमूना देने के लिए होना था। प्रेरितों को सारी सच्चाई में अगुआई दी गई थी (यूहन्ना 16:13), और उन्होंने सुसमाचार का प्रचार किया जिससे प्रभु की कलीसिया स्थापित हुई थी। वह कलीसिया प्रेरितों द्वारा दी गई शिक्षाओं को आगे बताती थी और उनका पालन करती थी। नये नियम में हमें उसी कलीसिया के बारे में पढ़ने को मिलता है! हमें वहां उसकी शिक्षा, आराधना और संगठन के बारे में पता चलता है। यदि इस प्रकार से कलीसिया की स्थापना करके और कलीसिया के विषय में इन तथ्यों को प्रकट करके मसीह आने वाले युग के लिए कोई नमूना नहीं ठहराना चाहता था तो उसने यह नमूना दिया ही ज़्यों?

हमारा मानना है कि मसीह द्वारा स्थापित कलीसिया वैसी ही है जैसे मसीह ने इसे चाहा था। जब तक कलीसिया प्रेरितों द्वारा दिखाए गए नमूने का पालन करती रही, तब तक वह परमेश्वर को भाती रही। यदि हम उसी नमूने का पालन करते हैं तो हम *आश्वस्त हो सकते हैं* कि हम परमेश्वर को भाने वाले नमूने का पालन कर रहे हैं।

कुछ लोग इस बात पर आपज़ि जताते हैं कि नये नियम के समय कलीसिया के लिए *एकमात्र नमूना* नहीं था। नये नियम की कलीसिया की बहाली के बारे में समझाने के लिए एक प्रचारक से अपनी मुलाकात मुझे याद है। उसका उज़र था, ''तो आप नये नियम की कलीसिया को बहाल करना चाहते हैं? पर *किस* कलीसिया को? आप यरूशलेम की,

अन्ताकिया की, इफिसुस की या फिर कुरिन्थुस की कलीसियाओं में से कौन सी कलीसिया को बहाल करना चाहते हैं?'' वह मानता था कि नये नियम की मण्डलियां इतनी अलग थीं कि कलीसिया को बहाल करने के लिए आज और कोई नमूना नहीं है। ज़्या वह सही था?

पहली सदी की प्रभु की कलीसिया की मण्डलियों में कुछ असमानताएं थीं। पर उनके सब मतभेद केवल दो बातों में हो सकते हैं। कुछ मतभेद उपयोगिता के विषयों में और कुछ प्रेरितों की शिक्षा के कारण नहीं, बल्कि प्रेरितों की शिक्षा को न मान पाने के कारण थे। मसीह द्वारा स्थापित कलीसिया में कोई कमी नहीं थी, लेकिन इसमें पाए जाने वाले लोगों में आवश्य कमियां थीं। हम इसकी उस पूर्णता को बहाल करना चाहते हैं न कि इसके अपूर्ण सदस्यों की गलतियों को।

इसके अतिरिज़्त, प्रमाण से पता चलता है कि *जिन क्षेत्रों में एक ही विश्वास पाया जाता था,* वहां प्रभु की कलीसिया की मण्डलियां अलग-अलग जगह होने पर भी एक थीं। हर कलीसिया या मण्डली में ऐल्डर नियुज़्त किए जाते थे (प्रेरितों 14:23); वे आराधना में गीत गाते थे (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:17); वे प्रभु भोज में भाग लेते थे (प्रेरितों 2:42; प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 11); उन्हें अपनी आमदनी के अनुसार चंदा देना होता था (1 कुरिन्थियों 16:1, 2); वे डुबकी का बपतिस्मा देते थे (प्रेरितों 8:39; रोमियों 6:3, 4; कुलुस्सियों 2:12); सब लोगों का उद्धार एक ही तरह से होता था (प्रेरितों 15:9, 11); प्रेरितों की पत्रियां मण्डली के सब लोगों के लिए होती थीं (कुलुस्सियों 4:16)। वास्तव में पौलुस ने लिखा कि ''इसलिए मैं ने तीमुथियुस को जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुज़्हारे पास भेजा है, और वह तुज़्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपदेश करता हूं'' (1 कुरिन्थियों 4:17)। फिर कोई कैसे कह सकता है कि नये नियम की प्रभु की कलीसिया की मण्डलियां इतनी अलग थीं कि हमें आज की कलीसिया के लिए उनमें से कोई नमूना नहीं मिल सकता?

दूसरा, कई लोग कहते हैं कि असाज़्प्रदायिक मसीहियत को बहाल करने के प्रयास की *आवश्यकता नहीं* है ज़्योंकि सब डिनोमिनेशन एक ही कलीसिया की शाखाएं हैं।

ज़्या वे सही हैं? ज़्या सभी साज़्प्रदायिक कलीसियाएं उस कलीसिया की शाखाएं अर्थात उस पूर्णता का भाग हैं? यह तो हो सकता है कि वे साज़्प्रदायिकवाद या डिनोमिनेशनलिज़्म की शाखाएं हों या प्रोटेस्टेंटवाद का भाग हों, परन्तु उनके उस कलीसिया का जिसका उल्लेख नये नियम में हमें पढ़ने को मिलता है, भाग होने पर हमें संदेह है। नये नियम में, ''शाखाएं'' हमें केवल एक ही बार पढ़ने को मिलता है जहां मसीह कहता है, ''मैं दाखलता हूं: तुम डालियां हो'' (यूहन्ना 15:5)। पर वह आगे कहता है, ''यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाईं फेंक दिया जाता है और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं'' (यूहन्ना 15:6)। मसीह में हर व्यज़्ति उसकी शाखा या डाली है!

ज़्या आपने कभी कोई ऐसी दाखलता देखी है जिसकी एक टहनी में संतरे, दूसरी में खूबानी और किसी और टहनी में तरबूज़ लगते हों? यकीनन ऐसा नहीं हो सकता! एक दाख

की हर टहनी में एक ही फल लगेगा। पर डिनोमिनेशन या साज़्प्रदायिक कलीसियाएं एक ही फल नहीं दे रही हैं! उनमें अलग-अलग तरह के संतरे, खूबानियां और तरबूज़ हैं। इसलिए वे नये नियम की एक ही कलीसिया की शाखाएं नहीं हैं; वास्तव में हर एक स्वयं दाखलता है।

तीसरा, कुछ लोग यह आपज़ि करते हैं कि आज असाज़्प्रदायिक मसीहियत फिर से बनाने की कोशिश करना *अव्यावहारिक* है।

कुछ लोगों का दावा है कि नये नियम की मसीहियत को बहाल करके हमने एक और डिनोमिनेशन ही जोड़ी है।

वे ''डिनोमिनेशन'' का वह पहला अर्थ लेते हैं जिसे हम ''एक नाम'' कहते हैं, और फिर वे निष्कर्ष निकालते हैं कि किसी कलीसिया का यदि कोई नाम है तो वह साज़्प्रदायिक कलीसिया या डिनोमिनेशन ही है। ज़्या अलग नाम होने के कारण हम डिनोमिनेशन बन जाते हैं?

कृपया ध्यान दें कि हम दूसरे सभी नामों को छोड़ *एक* नाम अपनाने का दावा नहीं करते। ''कलीसिया,'' ''देह,'' ''मसीह की कलीसिया'' ऐसे नाम हैं जिनसे पता चलता है कि यह कलीसिया मसीह की है। ये सभी अभिव्यज़्तियां नये नियम में मिलती हैं। अन्य शज़्दों में, यदि *नाम* डिनोमिनेशन या साज़्प्रदायिक कलीसिया बन जाती है तो फिर नये नियम की कलीसिया एक डिनोमिनेशन ही थी।

पर डिनोमिनेशन या साज़्प्रदायिक कलीसिया होने के लिए केवल नाम ही काफी नहीं है। इन्हें साज़्प्रदायिक कलीसियाओं के नाम दूसरे गुटों से भिन्नताओं के कारण दिए गए हैं। कलीसियाओं में भिन्नता यदि उनके नामों के कारण होती, तो कोई डिनोमिनेशन होती ही नहीं। ये सब एक होतीं! नाम होने से कोई कलीसिया डिनोमिनेशन नहीं बन जाती।

कुछ लोगों का कहना है कि कोई कलीसिया इसलिए डिनोमिनेशन है कि उसका अपना अस्तित्व है, अलग विश्वास, रीतियां और शिक्षाएं हैं चाहे वे बाइबल में लिखी हों या नहीं। इस परिभाषा के इस्तेमाल के अनुसार नये नियम की कलीसिया एक डिनोमिनेशन ही होगी! और कोई इस बात पर विश्वास नहीं करता। दूसरे गुटों से अलग होने और अपनी शिक्षा और रीतियां होने के कारण कोई कलीसिया साज़्प्रदायिक नहीं बन जाती।

कुछ लोग इस आधार पर नये नियम की कलीसिया की बहाली पर प्रहार करते हैं कि इससे समाज में एक और धार्मिक फूट पैदा हो जाती है। उनका कहना है कि जब हम वहां साज़्प्रदायिक स्थिति से राहत मिलने के बजाय, समाज में काम करना आरज़्भ कर देते हैं तो हम पहले से वहां पाई जाने वाली कलीसियाओं में *एक और* कलीसिया को जोड़कर इसे बदतर ही करते हैं।

ऐसा लगेगा कि इस बात में सच्चाई है। जब हम समाज में काम आरज़्भ करते हैं, तो एक और कलीसिया बन जाती है, और बाहर से देखने वाले को यही लगेगा कि यह एक और डिनोमिनेशन है।

परन्तु बाहरी रूप धोखा देने वाला हो सकता है। असाज़्प्रदायिक मसीहियत बनाने के लिए हम दूसरी कलीसियाओं में से ही काम ज़्यों नहीं करते? इस प्रश्न का उज़र बहुत पहले

ढूंढ़ लिया गया था। कलीसिया की बहाली की लहर के प्रारम्भिक दिनों में, इस लहर के अगुओं ने साज़्प्रदायिकवाद की मूर्खता को समझने में सहायता करने के लिए साज़्प्रदायिक कलीसियाओं के साथ संगति बनाए रखी थी। अन्त में, उन्होंने साज़्प्रदायिकवाद से अपना सज़्बन्ध तोड़ लिया और अलग होकर आराधना करने लगे। ज़्यों? *उन्हें निकाल दिया गया था!* डिनोमिनेशनें या साज़्प्रदायिक कलीसियाएं असाज़्प्रदायिक मसीहियत के बारे में सुनना नहीं चाहती थीं; उन्होंने नये नियम की कलीसिया की ओर लौटने की बिनती करने वाले लोगों को अपने पुलपिटों से बोलने से मना कर दिया है। एक नियम के रूप में, तब से डिनोमिनेशनों के पुलपिट असाज़्प्रदायिक मसीहियत की शिक्षा के लिए बन्द कर दिए गए हैं।

अन्य शज़्दों में, असाज़्प्रदायिक मसीहियत की बिनती केवल इस कारण से फूट डालने वाली लगती है ज़्योंकि लोग अपनी पदवियों को छोड़ना नहीं चाहते और यही कारण है कि उनके द्वारा असाज़्प्रदायिक कलीसिया की बिनती करना सज़्भव नहीं है।

अब आइए *इसके पक्ष की एक सरल सी बात* पर विचार करते हैं।

ज़्या आज असाज़्प्रदायिक कलीसिया हो सकती है? इस वाज़्य पर विचार करें: *यदि हम वही करते हैं जो उन्होंने मसीही बनने के लिए और मसीही बने रहने के लिए किया तो हम वही होंगे जो वे हैं।* ज़्या यह स्पष्ट नहीं है? नये नियम के समय में लोग मसीही बनने के लिए कुछ करते थे और फिर मसीहियों के रूप में विशेष प्रकार से रहते, आराधना करते और मण्डलियां बनाते थे। यदि हम भी वही करते हैं जो उन्होंने किया था तो हमें वही अर्थात नये नियम के मसीही और असाज़्प्रदायिक कलीसिया के सदस्य बनना होगा जैसे वे लोग थे ।

समस्या यह है कि फूट से मसीहियत इतनी पीड़ित हो चुकी है कि हम असाज़्प्रदायिक अर्थों में मसीहियत की बात सोच भी नहीं सकते। डिनोमिनेशनलिज़्म या असाज़्प्रदायिक मसीहियत के बिना मसीह के धर्म की तस्वीर स्पष्ट करने की कोशिश करें।

कल्पना करें कि तीन साज़्प्रदायिक कलीसियाएं ''एकता'' सभा करने का फैसला लेती हैं। वे एक बड़ा भवन किराये पर लेती हैं और किसी प्रचारक को बुलाती हैं। किसी का विरोध करने के लिए वे ऐसी सुसमाचार सभा करने का फैसला लेती हैं जिसमें आने वाला प्रचारक वही प्रचार करे जो पतरस ने प्रेरितों 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त के दिन किया था, और उसके बाद वे मन फिराने वालों को अपनी इच्छा से किसी भी कलीसिया को चुनने देंगे।

सुसमाचार सभा होती है। प्रचारक मसीह का प्रचार करता है। लोग मसीह में विश्वास करके पाप के विषय में निरुज़र होते हैं। पतरस की तरह ही वह प्रचारक लोगों से कहता है, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। फिर पिन्तेकुस्त के दिन उन लोगों की तरह, वचन को आनन्द से ग्रहण करने वाले लोग बपतिस्मा लेते हैं। सभा की समाप्ति के बाद दो सौ लोग बपतिस्मा लेते हैं।

उसके बाद मसीही बनने वाले दो सौ लोगों को इन तीनों कलीसियाओं में से किसी एक में शामिल होने का अवसर दिया जाता है। पचास लोग एक डिनोमिनेशन में शामिल हो जाते हैं, पचास दूसरी में और पचास लोग तीसरी डिनोमिनेशन में शामिल हो जाते हैं। लेकिन शेष

पचास लोग कहते हैं, ''हम किसी डिनोमिनेशन में ज़्यों शामिल हों? हमने वैसे ही आरज़्ज़ किया है जैसे नये नियम के समय में लोगों ने किया था, और हम तो वैसे ही करेंगे जैसे वे करते थे।'' इस कारण, अन्तिम पचास लोग वैसी ही एक मण्डली बना लेते हैं जैसी नये नियम की कलीसिया की थी।

अब दो प्रश्न उठते हैं। पहला, उन आखिरी पचास लोगों के बारे में, कि ज़्या उन्हें किसी कलीसिया के सदस्य बनना चाहिए? यदि उन्होंने अपना जीवन नये नियम के नमूने के अनुसार शुरू किया और उसी नमूने का पालन करते रहे, तो वे नये नियम की कलीसिया नहीं तो और ज़्या होंगे? दूसरा, उन नये बने मसीहियों में सभी दो सौ लोगों के विषय में, मान लें कि उन्होंने सचमुच सुसमाचार को मान लिया था, तो यह फैसला लेने से *पहले* कि वे किस डिनोमिनेशन में जाएंगे, वे किस डिनोमिनेशन के सदस्य थे? ज़्या वे किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया या डिनोमिनेशन का सदस्य बने बिना उद्धार पा सकते थे और प्रभु की कलीसिया के सदस्य बन सकते थे?

हम इस बात पर ज़ोर देते हैं कि आज यदि लोग वही करते हैं जो मसीही बनने और मसीहियों के रूप में रहने के लिए नये नियम के समय के लोगों ने किया था, तो वे भी वही होंगे जो नये नियम के समय के लोग थे, अर्थात केवल मसीही और नये नियम की असाज़्प्रदायिक कलीसिया के सदस्य।

अपने लक्ष्य को समझाने और उसका पक्ष रखने के बाद, हम इस प्रश्न का उज़र देने को तैयार हैं कि *यदि एक कलीसिया दूसरी कलीसिया की तरह अच्छी है, तो फिर असाज़्प्रदायिक होने की चिंता करने की ज़्या बात है?*

असाज़्प्रदायिक मसीहियत के लिए बिनती

अन्त में असाज़्प्रदायिक मसीहियत की बिनती पर विचार करें। ज़्या असाज़्प्रदायिक होने का कोई कारण है? हम इसके उज़र के लिए पाठ के शीर्षक में वापस जाते हैं: मैं आपसे असाज़्प्रदायिक होने की अपील करता हूं ज़्योंकि एक कलीसिया दूसरी कलीसिया की तरह अच्छी *नहीं* है।

कृपया मुझे गलत न समझें। मैं यह नहीं कह रहा कि एक डिनोमिनेशन दूसरी की तरह अच्छी नहीं है। मैं तो यह प्रश्न कर रहा हूं कि कोई डिनोमिनेशन प्रभु की कलीसिया की तरह अच्छी है या नहीं। यदि कोई डिनोमिनेशन साज़्प्रदायिक कलीसिया प्रज़ु की कलीसिया की तरह ही अच्छी है तो हमें इस विषय को यहीं समाप्त करके यह कहना चाहिए कि हमें असाज़्प्रदायिक होने की आवश्यकता *नहीं* है।

इस प्रश्न के साथ कि कोई डिनोमिनेशन नये नियम की कलीसिया की तरह अच्छी है या नहीं, इन प्रश्नों पर विचार करें:

ज़्या एक देह दूसरी देह की तरह अच्छी है? आपके लिए आपका शरीर किसी भी दूसरे शरीर से अधिक महत्व रखता है। इसी प्रकार, कलीसिया मसीह की देह है (इफिसियों 1:22, 23)। ज़्या मसीह के लिए कोई दूसरी देह (डिनोमिनेशन जिसे उसने शुरू नहीं

किया) उसकी अपनी देह की तरह बहुमूल्य है ?

ज़्या आपका एक दुल्हन दूसरी दुल्हन की तरह अच्छी है ? पुरुषो, ज़्या आप दूसरी दुल्हनों को अपनी दुल्हन से अधिक महत्व देते हैं ? नहीं न ! कलीसिया को भी मसीह की दुल्हन के रूप में दर्शाया गया है (इफिसियों 5:23-25; रोमियों 7:4)। ज़्या मसीह किसी दूसरी कलीसिया को अपनी दुल्हन जितना महत्व देता है ?

ज़्या एक परिवार किसी दूसरे परिवार की तरह ही अच्छा है ? अपने परिवार के प्रति हमारे दिल में एक विशेष जगह होती है; और हम इसकी जगह किसी दूसरे को नहीं देते। कलीसिया परमेश्वर का परिवार है (1 तीमुथियुस 3:15)। ज़्या परमेश्वर अपने परिवार से अधिक किसी दूसरे परिवार को महत्व देगा ?

ज़्या किसी डिनोमिनेशन में उद्धार मिलता है ? उद्धार कलीसिया *में* ही पाया जाता है। मसीह कलीसिया के लिए मरा, और कलीसिया का उद्धार करता है (इफिसियों 5:23-25)। उद्धार पाए हुए लोगों को कलीसिया में मिला लिया जाता है (प्रेरितों 2:47)। ज़्या किसी साज़्प्रदायिक कलीसिया या डिनोमिनेशन के लिए यही बात कही जा सकती है ?

सारांश

हम ज़्या निष्कर्ष निकालें ? एक डिनोमिनेशन या साज़्प्रदायिक कलीसिया किसी दूसरी साज़्प्रदायिक कलीसिया की तरह ही अच्छी हो सकती है, पर कोई भी साज़्प्रदायिक कलीसिया प्रभु की कलीसिया की तरह अच्छी नहीं है। इसलिए हम आपसे असाज़्प्रदायिक होने की बिनती को स्वीकार करने का आग्रह करते हैं ज़्योंकि हमारा मानना है कि मसीह की देह, मसीह की दुल्हन और परमेश्वर के परिवार में होने और सुनिश्चित करने का और यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप उन लोगों का भाग हैं जिन्हें मसीह बचाता है केवल यही ढंग है।

ज़्या आपने कभी कलीसियाएं बदलने के बारे में सोचा है ? बहुत से लोग ऐसे हैं जिनकी किसी विशेष डिनोमिनेशन के प्रति वफ़ादारी नहीं होती और वे एक से दूसरी डिनोमिनेशन में आते जाते रहते हैं। किसी दूसरी कलीसिया को चुनने का आपका आधार ज़्या होना चाहिए ?

हमारा सुझाव है कि एक से दूसरी डिनोमिनेशन में जाना कोई अच्छी बात नहीं है। आपको यदि जाना ही है तो पूरी तरह मन बनाकर सही बात को आधार मानते हुए और यह पूछकर कि प्रभु मुझसे ज़्या करवाना चाहता है, कलीसिया बदलें ? इतनी कलीसियाओं में से उसकी कलीसिया कौन सी है ? ''अपनी पसन्द की कलीसिया में'' न जाएं। बल्कि मसीह की पसन्द की कलीसिया को चुनें !

हम मसीह की कलीसिया के लिए बिनती कर रहे हैं जिसके बारे में आप नये नियम में पढ़ते हैं। पहले से ही कोई धारणा बनाने वाला व्यज़्ति उस कलीसिया में कोई गलती ज़्यों निकाले ? उस अपील को मानने पर आप विचार ज़्यों नहीं करते।

पाद टिप्पणियां

[1]द वर्ल्ड बुक डिक्शनरी, 1967 संस्क., s.v. ''डिनोमिनेशन।'' [2]*पॉकेट ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी* s.v. ''डिनोमिनेशन।'' [3]जेम्स सी. फरनाल्ड, *सिनोनिम्स, एंटोनिम्स, एण्ड प्रेपोज़िशन्स* (न्यू यॉर्क: फंक एण्ड वागनलस कं., 1947), 93. [4]*यूज़ द राइट वर्ड* (प्लीजेंटविल्ले, न्यू यॉर्क: रीडर'स डायजेस्ट एसोसिएशन, 1969), 149.